अध्याय - 1

कब, कहाँ और कैसे

पिछली कक्षाओं में हमने यह जाना है कि अध्ययन की सुविधा के लिए इतिहास को प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक, तीन कालखण्डों में बाँटा गया है। कक्षा छह में आपने प्राचीन एवं कक्षा सात में मध्यकाल में हुए मुख्य परिवर्तनों एवं विशेषताओं के बारे में जाना। अब कक्षा आठ में हम मुख्य रूप से आधुनिक काल में हुए परिवर्तनों और उनकी जानकारी हमें जिन स्रोतों से मिलती है उनके बारे में जानेंगे। प्रत्येक काल में होने वाले परिवर्तन ही उस काल की विशेषता होती है। आप यह भी जानते हैं कि हमारी दुनिया शुरू से लेकर आज तक कभी भी स्थिर नहीं रही। यह हमलोगों के सामूहिक क्रिया कलापों के कारण हमेशा बदलती रहती है। इन बदलावों के कारण हमारे समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति, कला, संस्कृति, आदि प्रायः सभी क्षेत्रों में परिवर्तन होते रहते हैं।

आप कक्षा छह एवं सात में पढ़ी गई बातों के आधार पर चर्चा करें –

1. **प्राचीन काल में मनुष्य की जिंदगी में आने वाले पांच मुख्य परिवर्तन क्या हो सकते हैं?**
2. **मध्य काल में सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में आए पांच मुख्य परिवर्तन क्या हो सकते हैं?**

आधुनिक युग में भी बहुत सारे परिवर्तन हुए। ये परिवर्तन हमारे देश के साथ–साथ दुनिया के अन्य भागों में भी हुए। ये परिवर्तन कब और कैसे शुरू हुए और उन्होंने दुनिया को किस तरह प्रभावित किया, आइए इसे समझने का प्रयास करें।

पुनर्जागरण

आधुनिक युग को जन्म देने वाले अनेक परिवर्तनों की शुरूआत सबसे पहले यूरोप में हुई। पन्द्रहवीं शताब्दी में इटली में एक नया आंदोलन आरंभ हुआ, जिसे 'पुनर्जागरण' कहा

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

जाता है। इस आंदोलन ने लोगों को स्वतंत्र रूप से सोचने और पहले से चले आ रहे सिद्धांतों पर प्रश्न उठाने के लिए प्रेरित किया। फलतः वैज्ञानिक पद्धति का प्रसार हुआ। वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ है प्रश्न प्रस्तुत करके प्रयोग द्वारा सत्य को जानना। प्रश्न चिह्न लगाने की इस आजादी ने लोगों को अपने ही शासकों के प्रति आवाज बुलंद करने के लिए भी प्रेरित किया। धार्मिक क्षेत्र में भी लोग अंधविश्वास पर आधारित आपत्तिजनक प्रयासों के खिलाफ आवाज उठाने लगे। व्यापार–संबंधों और अन्य सम्पर्कों के जरिए इस दृष्टिकोण का धीरे–धीरे दुनिया के अन्य भागों में भी विस्तार हुआ।

खोज यात्राएं

सीमित मान्यताओं की सच्चाई जांचने के साथ–साथ इस वक्त नई चीजों को खोजने के भी काफी प्रयास किये गए। इसी समय अपने इलाके से बाहर की दुनिया के बारे में जानने का भी प्रचलन हुआ। इसके अन्तर्गत यूरोप के नाविकों और नौचालकों ने दुनिया के अन्य देशों तक पहुँचने के प्रयास भुरू किए। एशिया और अमेरिका के देशों तक पहुँचने के लिए समुद्री मार्गों की खोज भी इन्हीं प्रयासों का परिणाम थी। इन प्रयासों से यूरोप के लोग कुछ ऐसे देशों तक भी पहुंच पाये जिनके बारे में उन्हें और दुनिया के बहुत सारे लोगों को कोई जानकारी नहीं थी। आपने स्पेन के प्रसिद्ध नाविक कोलंबस के बारे में सुना होगा जिसने इसी समय 1492 ई. में अमेरिका महाद्वीप की खोज की। पुर्तगाल के नाविक वास्कोडिगामा के बारे में भी आपने सुना होगा कि उसने 1498 ई. में यूरोप से भारत तक के समुद्री मार्ग की खोज की थी। (इसके बारे में विशेष रूप से इकाई–2 में पढ़ेंगे) नये मार्गों और

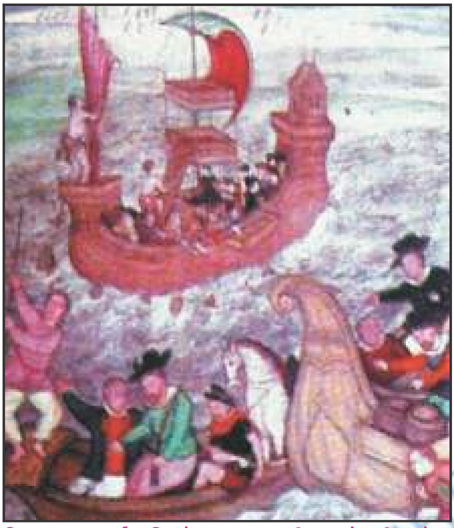
चित्र 1 – पुर्तगालियों द्वारा समुद्री रास्ते की खोज

चित्र 2 – वास्कोडिगामा

भू–भागों की खोज का एक परिणाम यह हुआ कि यूरोप के देशों का इन नए देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित हुआ।

पूंजीवाद एवं औद्योगिक क्रांति

चित्र 3 – कारखाना

इन व्यापारिक संबंधों से यूरोप के व्यापारियों ने बहुत लाभ कमाया। लाभ होने के कारण धीरे–धीरे इनके पास पूँजी जमा होने लगी। इस पूँजी को उन्होंने पुनः व्यापार में लगाया। इस प्रकार पंद्रहवीं शताब्दी के अन्त तक यूरोप में एक नयी सामाजिक व्यवस्था का जन्म हुआ, जिसे 'पूंजीवाद' कहते हैं। इस नयी सामाजिक व्यवस्था की मुख्य विशेषता थी पूंजीपतियों और श्रमिकों के दो नये वर्गों का उदय। पूंजीपति व्यापार के लिए तैयार होनेवाली वस्तुओं के मालिक थे और उनका मुख्य उद्देश्य था मुनाफा कमाना। श्रमिक लोग वस्तुओं का उत्पादन करते थे और पूंजीपतियों से वेतन प्राप्त करते थे। पूंजीवाद के विकास के साथ–साथ उत्पादन के तरीकों में भी परिवर्तन होने लगा। आपको याद होगा कि मध्यकाल में कपड़े जुलाहे अपने हाथों से बनाते थे। आधुनिक युग में कपड़े जुलाहे के अतिरिक्त मशीनों से भी तैयार किये जाने लगे। मशीनीकरण की यह प्रक्रिया इंग्लैड में अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में शुरू हुई और फिर धीरे–धीरे अन्य देशों में भी फैली, जिसे औद्योगिक क्रान्ति का नाम दिया गया।

उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद

उद्योगों की स्थापना के कारण इन देशों में वस्तुओं का उत्पादन काफी तेजी से होने लगा। अब इन तैयार वस्तुओं को बेचने के लिए बाजार की आवश्यकता थी। साथ ही इन वस्तुओं को तैयार करने के लिए कच्चे माल की आवश्यकता भी थी। इन दोनों ही

आवश्यकताओं ने यूरोप के देशों को अपने देशों से बाहर की दुनिया में पैर फैलाने पर मजबूर कर दिया। इन देशों को लगा कि अगर वे दूसरे देशों की अर्थव्यवस्था पर काबू पा लेंगे तो उन्हें अपने उद्योगों के लिए न केवल कच्चा माल सस्ते दामों में मिलने लगेगा बल्कि उनके तैयार माल के लिए बाजार भी उपलब्ध हो जाएगा। इससे साम्राज्यवादी व्यवस्था की शुरुआत हुई। अठारहवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में शुरू हुई यह प्रक्रिया एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के अधिकांश देशों को औद्योगिक यूरोपीय देशों के आर्थिक व राजनीतिक नियंत्रण के अन्दर ले आई। इस प्रक्रिया के अन्दर शासित देश **'कॉलोनी'** अर्थात् **उपनिवेश** कहलाए। बड़े पैमाने पर इस प्रक्रिया को अपनाने के कारण इस युग को **'औपनिवेशिक युग'** भी कहते हैं।

इन्हें भी जानें

साम्राज्यवाद : सैनिक अथवा अन्य तरीके से विदेशी भू–भाग के प्रदेशों को अपने अधीन कर अपना राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करना।

अमेरिकी एवं फ्रांसिसी क्रांति

दुनिया में हो रहे इन बदलावों के बीच अठारहवीं सदी के अंतिम दशकों में दो और महत्वपूर्ण बदलाव हुए। पहले का संबंध अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम से एवं दूसरे का संबंध फ्रांसिसी क्रांति से है। अमेरिका की खोज के बाद वहां पर यूरोप के देशों ने अपना कब्जा जमा लिया था। धीरे–धीरे यहां बस गए लोगों ने ही यूरोपीय देशों के भाासन के खिलाफ संघर्ष भाुरू किया। इसी तरह फ्रांस के लोगों ने भी राज परिवार तथा सामंत वर्ग के खिलाफ संघर्ष भाुरू किया। इन दोनों ही देशों में लोगों का अत्याचार, शोषण और अन्याय के खिलाफ एकजुट होकर किया गया संघर्ष सफल रहा।

चित्र 4 – उत्तरी अमेरिका में ब्रिटिश उपनिवेशों के लोग "स्वतंत्रता की घोषणा" का उत्सव मनाते हुए।

इसके बाद इन देशों के लोगों ने अपने–अपने देशों में गणतंत्र प्रणाली की सरकार स्थापित की। स्वतंत्रता और समानता उनके मार्ग दर्शक सिद्धान्त बन गए। फ्रांस और अमेरिका के इन आन्दोलनों का कई देशों के लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इसका एक प्रभाव यह भी था कि धीरे–धीरे एक निश्चित क्षेत्र में रहनेवाले लोगों में, जो लंबे समय से एक दूसरे के साथ थे और जो एक जैसी भाषा बोलते थे, अपने को एक जैसा मानने या एक राष्ट्र के रूप में पहचाने जाने की परंपरा भाुरू हुई।

अत्याचार और शोषण के शिकार हमारे देश में किस प्रकार की सरकार है? उसके नीति निर्देशक सिद्धान्तों पर चर्चा करें।

आधुनिक काल एवं हमारा देश

इस प्रकार यूरोप में हुए इन परिवर्तनों से प्रभावित होकर अन्य देशों के लोगों ने नये ढंग से सोचना–विचारना शुरू कर दिया। नये उपनिवेशों की तलाश में जब यूरोपीय हमारे देश में आए तो हमारे देश पर भी इन परिवर्तनों का प्रभाव पड़ा। आपको याद होगा कि अठारहवीं सदी के शुरू में हमारा देश किस प्रकार टुकड़ों में बंटा हुआ था।

> **इन्हें भी जानें**
>
> प्रायः अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध को (1750 ई. के बाद) आधुनिक काल का प्रारंभ माना जाता है। आधुनिक शब्द का इस्तेमाल जब समय के सन्दर्भ में किया जाता है तो इसका अर्थ अतीत का सबसे नजदीक हिस्सा जो पिछले लगभग तीन सौ वर्षों से संबंधित है।

इसी समय यूरोप के व्यापारी भारत के विभिन्न भागों में व्यापार में जुटे थे। उनमें से जो व्यापारी इंग्लैंड से आए वे व्यापार करते–करते धीरे–धीरे हमारे देश के शासक बन बैठे। इन्होंने हमारे देश के स्थानीय नवाबों व राजाओं को हराकर अपना शासन स्थापित किया (इनके बारे में विस्तार से आप इकाई–2 में पढ़ेंगे।) आगे के दो सौ सालों तक हमारे देश पर इनका भाासन रहा। हमारे देश में अंग्रेजी शासन आने से अंग्रेजी शिक्षा एवं नवीन विचारों का प्रवेश हुआ। फलतः भारतीय लोगों में जागृति आई। आगे की इकाइयों में आप देखेंगे कि किस प्रकार अंग्रेजों ने हमारे देश के आर्थिक संसाधनों का अपने लाभ के लिए इस्तेमाल

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

किया, अपनी जरूरत की चीजों को सस्ती कीमत पर खरीदा, निर्यात के लिए या अपने लाभ के लिए नई फसलों की खेती करायी। आगे आप यह भी जानेंगे कि लम्बे समय तक अंग्रेजी शासन के फलस्वरूप हमारे देश के मूल्यों, मान्यताओं, पसंद–नापसंद, रीति–रिवाज और तौर–तरीकों में महत्वपूर्ण बदलाव आए। जब एक देश पर किसी दूसरे देश के दबदबे से इस तरह के राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव आते हैं तो इस प्रक्रिया को **औपनिवेशीकरण** कहा जाता है और इस अवस्था को **'उपनिवेशवाद'** कहते हैं।

इस काल विभाजन से अलग हटकर कुछ इतिहासकार आर्थिक तथा सामाजिक कारकों के आधार पर भी अतीत के विभिन्न कालखंडों की विशेशताएँ तय करते हैं। इसी तरह कई अंग्रेज इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास के कालखंडों को अपने नजरिये से बांटने की कोशिश की है। 1817 ई. में स्काटलैंड के अर्थशास्त्री, इतिहासकार और राजनीतिक दार्शनिक जेम्स मिल ने तीन खंडों में (हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया) ब्रिटिश भारत का इतिहास नामक एक किताब लिखी। इस किताब में उन्होंने भारत के इतिहास को हिन्दू–मुस्लिम और ब्रिटिश इन तीन काल खंडों में बांटा। यह विभाजन इस विचार पर आधारित था कि शासकों का धर्म ही एकमात्र महत्वपूर्ण ऐतिहासिक परिवर्तन होता है। कालखंडों के इस निर्धारण को उस वक्त लोगों ने मान भी लिया।

क्या आप भारतीय इतिहास को समझने के इस तरीके से सहमत हैं? कक्षा में चर्चा करें।

जेम्स मिल को लगता था कि एशियाई देश प्रगति और सभ्यता के मामले में यूरोप से काफी पीछे थे। उनका मानना था कि भारत में अंग्रेजों के आने से पहले यहाँ हिन्दू और मुसलमान तानाशाहों का शासन था। भारत के लोग इतने पिछड़े और असभ्य थे कि अंग्रेजी शासन से ही उसका कल्याण हो सकता था। अंग्रेज भारतीयों से श्रेष्ठ और बेहतर थे। एक ओर तो वे भारतीय इतिहास को हिन्दू और मुस्लिम काल में बाँटते हैं, जबकि अपने लिए ब्रिटिश भाब्द का प्रयोग करते हैं, इसाई शब्द का प्रयोग नहीं करते। ब्रिटिश शब्द से संभवतः अपनी एकता और राष्ट्रीयता का बोध कराना चाहते थे।

WEB COPY NOT TO BE REPUBLISHED © BSTBPC

जरा सोचिए क्या इतिहास के किसी कालखण्ड की अवधि को 'हिन्दू' 'मुस्लिम' या 'ईसाई' दौर कहा जा सकता है? क्या किसी भी अवधि में कई तरह के धर्म एक साथ नहीं चलते? क्या किसी अवधि में अन्य धर्मों के लोगों के जीवन और तौर–तरीकों का कोई महत्व नहीं होता। हमें यह याद रखना चाहिए कि किसी भी अवधि का इतिहास किसी एक तरह के लोगों से अकेले नहीं बनता बल्कि समाज के सारे लोगों को एक साथ मिलकर साथ चलने से बनता है।

इतिहास को हम अलग–अलग कालखंडों में बाँटने की कोशिश क्यों करते हैं? चर्चा करें।

इतिहास को जानिए

आपने पिछली कक्षाओं में पढ़ा है कि इतिहासकार इतिहास को जानने के लिए जिन स्रोत साधनों का प्रयोग करते हैं उसे ऐतिहासिक स्रोत कहते हैं। कक्षा छह एवं कक्षा सात में भी आपने ऐतिहासिक स्रोतों के बारे में पढ़ा था। प्राचीन काल एवं मध्य काल के कुछ ऐतिहासिक स्रोतों का स्मरण करते हुए निम्न तालिका को भरने का प्रयास करें –

	प्राचीन काल	मध्य काल
स्रोत – 1	शिला लेख	पांडुलिपि
2		
3		
4		
5		

स्मरण करें प्राचीन काल एवं मध्य काल के स्रोत तो प्रायः एक ही थे। लेकिन प्राचीन काल की तुलना में मध्य काल में स्रोतों की संख्या काफी अधिक हो गई। आपने देखा कि पुराने प्रकार के स्रोतों के अतिरिक्त मध्य काल में कुछ नए स्रोत भी सामने आए। आगे आप पायेंगे कि आधुनिक काल में इन स्रोतों की संख्या एवं विविधता में और भी वृद्धि हुई। ऐसा क्यों हुआ? आईये इसे समझने का प्रयास करें।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

सातवीं कक्षा में आपने पढ़ा था कि उन्नीसवीं सदी से पहले के सालों में छापाखाने नहीं थे। लिपिक या नकलनवीस हाथ से ही पाण्डुलिपियों की प्रतिकृति बनाते थे। बाद में उन्नीसवीं सदी के मध्य तक छपाई तकनीक के माध्यम से सरकारी विभाग की कारवाईयों के दस्तावेज की कई प्रतियाँ बनाई जाने लगीं। इन महत्वपूर्ण दस्तावेजों की प्रतियों को आप आज भी अभिलेखागारों एवं पुस्तकालयों में देख सकते हैं।

अभिलेखागारों में सरकार के दस्तावेजों को सुरक्षित रखा जाता है। इन दस्तावेजों में सरकार की योजनाओं एवं 'कर' से संबंधित दस्तावेज, पुलिस एवं सी.आई.डी. रिपोर्ट, विभिन्न राजनीतिक पार्टियों की गतिविधियों के रिकार्ड, विभिन्न कमिशनों के रिकार्ड आदि शामिल होते हैं। आज भी हर जिले में एक–एक रिकार्ड रूम होते हैं। इन्हें आप भी देख सकते हैं। इनके अतिरिक्त तहसील के दफ्तर, कलेक्टरेट, कमिशनर के दफ्तर, कचहरी आदि के रिकार्ड रूम भी महत्वपूर्ण हैं।

आप अपने जिले के रिकार्ड रूम में जाकर अपने जिले से संबंधित क्या–क्या जानकारियाँ प्राप्त करना चाहेंगे? इन जानकारियों की एक सूची बनाएँ।

इसी तरह पुस्तकालयों में वर्षों पहले के पुराने अखबार, व्यक्तिगत पत्र, डायरियां, निजी दस्तावेज आदि चीजें सुरक्षित रखी जाती हैं। महान व्यक्तियों के जीवन एवं आत्मकथा भी इतिहास के अध्ययन में उपयोगी साबित हुए हैं। इन पुस्तकों से हमें उन व्यक्तियों के बारे में विशेष जानकारी मिलती है, जिन्होंने राजनीति, प्रशासन एवं समाज सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया है। साथ ही इन पुस्तकों से हमें उस समय के समाज में हो रही विभिन्न प्रक्रियाओं के बारे में भी पता चलता है।

आत्मकथा एवं जीवनी के संबंध में अपने शिक्षक की सहायता से चर्चा करें।

अपने देश की राजधानी दिल्ली में राष्ट्रीय अभिलेखागार, नेहरू स्मारक पुस्तकालय एवं पटना स्थित सच्चिदानन्द सिन्हा पुस्तकालय, बिहार राज्य अभिलेखागार जैसी संस्थाओं में आप जाकर इन सामग्रियों का अध्ययन कर सकते हैं। इधर हाल के दिनों में पिछली पीढ़ी के

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

महत्वपूर्ण व्यक्तियों के भाषण, साक्षात्कार एवं स्मृतियों की रिकार्ड रखने की परम्परा भी कुछ संग्रहालयों में शुरू की गई है।

उन्नीसवीं सदी की शुरुआत तक पूरे देश का मानचित्र तैयार करने के लिए बड़े–बड़े सर्वेक्षण किए जाने लगे। सर्वेक्षणों में धरती की सतह, मिट्टी की गुणवत्ता, वहाँ मिलने वाले पेड़ पौधों और जीव जन्तुओं तथा स्थानीय फसलों का पता लगाया जाता था। इसके अलावा वानस्पतिक सर्वेक्षण, प्राणि वैज्ञानिक सर्वेक्षण, पुरातात्वीय सर्वेक्षण, मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण, वन सर्वेक्षण आदि कई दूसरे सर्वेक्षण भी किए जाते थे। आज ये सारे सर्वेक्षण महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत साबित हो रहे हैं।

उन्नीसवीं सदी के आखिर से हर दस साल में जनगणना भी की जाने लगी। जनगणना के द्वारा भारत के सभी प्रांतों में रहनेवाले लोगों की संख्या, उनका धर्म, जाति, व्यवसाय, शैक्षणिक स्तर आदि के बारे में जानकारियाँ इकट्ठी की जाती हैं। इन जानकारियों के आधार पर उनके बेहतरी के लिए भावी योजनाएँ तैयार की जाती हैं।

चित्र 5 – पटना स्थित बिहार अभिलेखागार

चित्र –6 शरीफे का पौधा – अंग्रेजों द्वारा बनाए गए वानस्पतिक उद्यान और प्राकृतिक इतिहास के संग्रहालयों में विभिन्न पौधों के नमूने और उनसे संबंधित जानकारियाँ इक्ट्ठा की जाती थीं। इन नमूनों के चित्र स्थानीय कलाकारों से बनवाए जाते थे।

भारत में पहली और आखिरी जनगणना कब हुई? आखिरी जनगणना में पूछे गये कुछ सवालों को अपने शिक्षक की मदद से इक्ट्ठा करें?

इन सारे ऐतिहासिक स्रोतों के अलावे एक आम अनपढ़ आदमी, आदिवासी, किसान, खदानों में काम करनेवाले मजदूर, फुटपाथ पर जिंदगी गुजारने वाले गरीब क्या सोचते थे,

उनके अनुभव क्या थे, इसे जानने के लिए हमलोगों को अभी और कोशिश करनी पड़ेगी। इसके लिए हमें उस समय के कवियों और उपन्यासकारों की रचनाएँ, स्थानीय बाजारों में बिकनेवाली लोकप्रिय पुस्तकें, यात्रियों के संस्मरण आदि चीजों को टटोलना होगा। आपने महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद के बारे में अवश्य सुना होगा। इनकी कई रचनाएँ जैसे गबन, गोदान एवं कफन में एक सामान्य आदमी की परिस्थितियों का जिक्र है। इनकी रचनाओं में तत्कालीन समाज की तस्वीर भी देखने को मिलती है।

कुछ लोग कहानियाँ, उपन्यास एवं ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित फिल्म भी बनाते हैं। इन फिल्मों के माध्यम से हम मनोरंजन के रूप में अतीत के बारे में जानकारी हासिल करते हैं।

अगर आपने कुछ कहानियों एवं ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित फिल्म देखी है तो वर्ग कक्ष में साथियों के बीच चर्चा करें।

करीब 200 साल पहले कैमरे का आविष्कार हुआ था। भारत में इसका इस्तेमाल 1850 ई. के दौरान शुरू हुआ। मुगल साम्राज्य के अंतिम बादशाह बहादुरशाह द्वितीय का फोटो उपलब्ध है। वह पहला और आखिरी मुगल बादशाह था जिसकी फोटो कैमरे से खींची गई थी। ऐतिहासिक स्रोत के रूप में व्यक्तियों, स्थानों और वस्तुओं के फोटो बहुतः उपयोगी साबित होते हैं।

आपने अभी तक ऐतिहासिक स्रोतों के बारे जाना। आइए कुछ ऐतिहासिक स्रोतों को विभिन्न समाचार पत्रों, सी. आई. डी. रिर्पोट, एवं पत्र के माध्यम से देखने का प्रयास करें–

चित्र 7 – बहादुरशाह जफर की कैमरे से ली गई तस्वीर

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

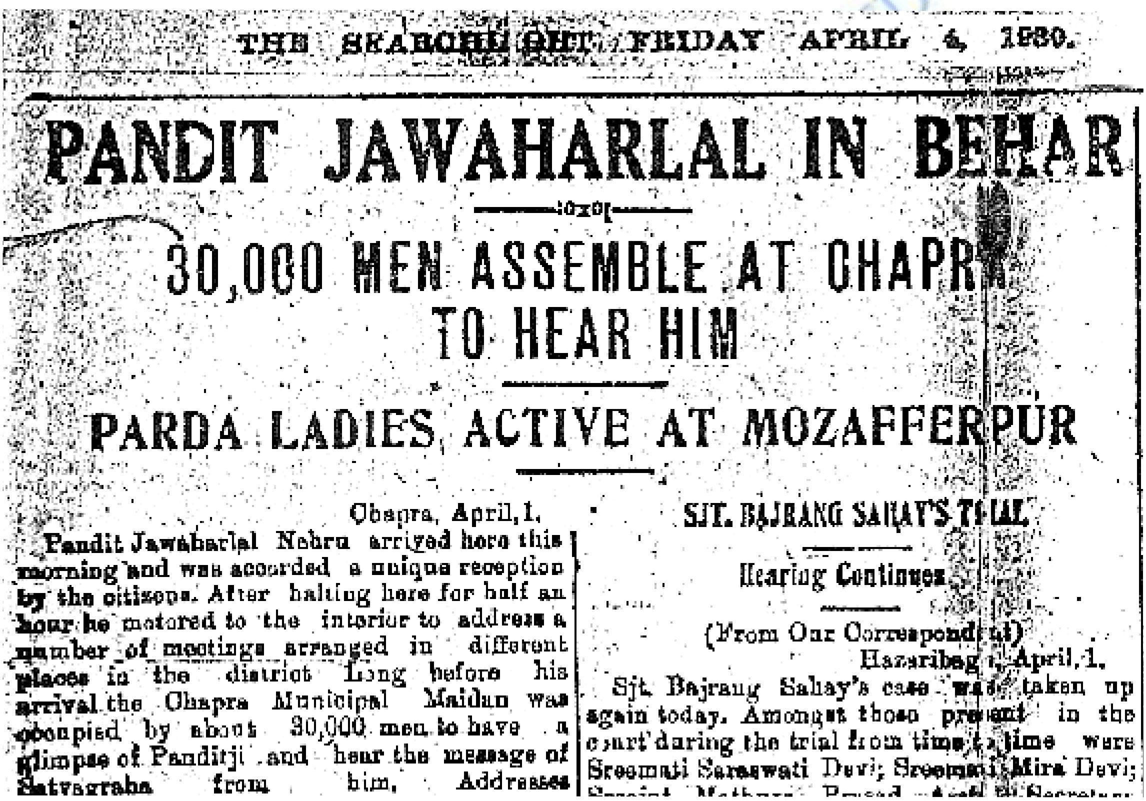

THE SEARCHLIGHT, FRIDAY APRIL 4, 1930.

PANDIT JAWAHARLAL IN BEHAR

30,000 MEN ASSEMBLE AT CHAPRA TO HEAR HIM

PARDA LADIES ACTIVE AT MOZAFFERPUR

Chapra, April, 1.

Pandit Jawaharlal Nehru arrived here this morning and was accorded a unique reception by the citizens. After halting here for half an hour he motored to the interior to address a number of meetings arranged in different places in the district. Long before his arrival the Chapra Municipal Maidan was occupied by about 30,000 men to have a glimpse of Panditji and hear the message of Satyagraha from him. Addresses

SJT. BAJRANG SAHAY'S TRIAL

Hearing Continues

(From Our Correspondent)

Hazaribagh, April, 1.

Sjt. Bajrang Sahay's case was taken up again today. Amongst those present in the court during the trial from time to time were Sreemati Saraswati Devi; Sreemati Mira Devi;

पंडित जवाहरलाल नेहरू का बिहार दौरा तीस हजार लोग छपरा में एकत्रित हुए

स्रोत

31 मार्च को पंडित जवाहरलाल नेहरू छपरा से अपनी सभा की शुरूआत की। छपरा रेलवे स्टेशन पर डा० महमूद एवं करीब 400 कार्यकर्त्ताओं ने उनका स्वागत किया। 9 बजे सुबह से आस–पास के इलाकों में करीब आठ गाँवों में सभाएं की। प्रायः हर जगह लोगों से अहिंसात्मक ढ़ंग से नमक कानून तोड़ने का आग्रह किया। 31 मार्च की रात को बेतिया के लिए रवाना हो गए। अगले दिन पहली अप्रैल को बेतिया में करीब बीस हजार लोगों की सभा को संबोधित किया। बेतिया से कार द्वारा मोतीहारी के लिए रवाना हुए। वहाँ दोपहर को करीब दस हजार लोगों की भीड़ को संबोधित किया। हर जगह लोगों ने उत्साहपूर्वक उनका स्वागत किया। अपने बिहार भ्रमण के दौरान उन्होंने सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, हाजीपुर एवं सारण जिलों में लोगों को अंग्रेजी शासन द्वारा प्रतिबंधित नमक कानून तोड़ने के लिए प्रेरित किया। 3 अप्रैल को उन्होंने सारण जिले में चौकीदारों से अंग्रेजी सेवा छोड़ने का आग्रह किया।

सी.आई.डी. विभाग की रिर्पोट 1930 मेमो नं. 3639 (हिन्दी अनुवाद)

THE SEARCHLIGHT, WEDNESDAY, MARCH 26, 1930.

BEHAR PREPARES FOR STRUGGLE

RALLYING ROUND CONGRESS BANNER

(From Various Correspondents)

PT. JAWAHAR LAL NEHRU

Tour In Behar

Pandit Jawaharlal Nehru will resume his Behar tour from the 31st March.

He will reach Chapra on the 31st March and proceed to Champaran from there on the 1st April when he will deliver lectures at places fixed by the Champaran Congress Committee and meet workers and volunteers. He will go to Muzaffarpur on the 2nd.

Volunteers in great numbers are enlisting their names in the Congress Committee Office.

PANDIT JAWAHAR LAL'S TOUR

Saran Programme

Pandit Jawahar Lal will arrive at Chapra at 6-15 a. m. on the 31st March.

Leaves Chapra at 8 a. m. as follows:—

On 31st March			On 1st April		
Dighwara	A. 9 a. m.		Siwan	A. 9 a. m.	
	D. 9-15	,,		D. 9-30	,,
Sonepur	A. 9-55	,,	Gopalganj	A. 10-30	,,
	D. 10	,,		D. 11	,,
Amnour	A. 10-30	,,	Bathua	A. 11-30	,,
	D. 10-45	,,		D. 11-45	,,
Baniapur	A. 11-30	,,	Thawe	A. 12-15 p.m.	

fury of a teacher was a young student of the Hindu School who was turned out of his class for using the locket but subsequently, it is learnt, that the teacher responsible for this has expressed his regret. The inevitable consequence of prohibitory orders and threats was that a large number of students attended their classes with badges on. The Head Master of the Zila School called each student, one by one, out of a long list and enquired of them whether they had any connection with Congress politics. Even the hawking of Khadi and singing of national songs in meetings are prohibited and the Education Code is cited as authority for such steps. The students have boldly refused to obey such humiliating rules if any. To shake the unbending determination of the students they have been asked to consult their guardians, with a threat that they may have to choose between the locket and the school. Names of those students, who still persist have been noted down. Guardians are naturally feeling worried over this unnecessary interference and provocation. Unless the situation is tactfully handled a serious situation is apprehended.

SWAMI BHAWANI DAYAL SANYASI

Extensive Tour In Shahabad

Swami Bhawani Dayal Sanyasi with Babu Rama Bahadur Prasad, Babu Jaleshwar Lal

कांग्रेस के झंडे के तले बिहारी संघर्ष के लिए तैयार

THE SEARCHLIGHT, FRIDAY, APRIL 11, 1930.

SATYAGRAH IN BIHAR

Our Correspondent)

Chapra, April 9.

[illegible] were made at Baraja [illegible] at about 4-30 P. M. The [illegible] arrested are Awadh Misra, Sakhi Chand [illegible] Pandey. The police party Satyagraha camp at about 3 waiting there all the time, the S. P. Police together came to the camp with some [illegible] were twelve [illegible] and consequently 12 [illegible] But curiously enough they [illegible] of them and told them arrested. These four Satyagrahis [illegible] replaced by others, [illegible] who were arrested on [illegible] sentenced yesterday to [illegible] imprisonments by Sub [illegible] of Chapra. There was [illegible] in the city. The students [illegible] and Vidyasagar Seminary [illegible] holiday while there was a [illegible] Rajput School and Saran [illegible] excitement prevailed [illegible]day.

T GORE-KOTHI

CAMPAIGN IN FULL SWING IN SARAN

11 CHAUKIDARS AND ONE DAFADAR RESIGN

NARAYAN BABU GETS ONE YEARS' S. I.

Pt. Bharat Misra And Others Arrested

MUZAFFARPUR TAKES FIELD

First Batch Starts For Sonbar

SATYAGRAH TO BEGIN ON APRIL 13

(From Our Own Correspondent)

Muzaffarpur, April 9.

Amid scenes of unprecedented enthusiasm the first batch of volunteers numbering eleven, captained by Sjt. Janakdhari Prasad, B. L.

AT MALKHACHAK

Satyagrah To Be Started On 13th

Dighwara, April 9.

It has been decided to start Satyagrah by preparing salt from the earth, at Gandhi Kutir, Malkhachak, in Dighwara Thana from the 13th April next. Permission has been sought, for beginning the campaign, from Babu Rajendra Prasad, the First Servant of the province, through a special

National Week

The celebration of National [illegible] this city with batches of vol[unteers] National Flag and inscript[ions] whole area from Digha to [illegible] ings were held in the area [illegible] Bhuswarpokhar and Mangal[illegible] day in the morning [illegible] round the mahallas [illegible] song and meetings [illegible] in different quarters every [illegible] decided to hold a meeting [illegible] during the week.

Enrolment

Enrolment of volunteers is [going on] briskly. After every [illegible] enlisted and the recruits are [illegible] the pledge at the Congress [illegible] Committee office is kept very [illegible] the morning to late at nigh[t] days above 200 volunteers ha[ve] [illegible] are ready [illegible] action is decided upon.

Collection

Thanks to the untiring [illegible] mati Chandravati, Kumari [illegible] Murli Manohar Prasad money [illegible] Besides volunteers are [illegible] from door to door.

Field Of Action

बिहार में सत्याग्रह पूरे उबाल पर 11 चौकीदार और एक दफादार ने अंग्रेजी सेवा से त्यागपत्र दिया

आज

काशी चैत्र शुक्ल १० सं० १९८७ मंगलवार सौर २५ चैत्र सं० १९८६ वै० ता० ८ अप्रैल सन १९३० ई०

महात्माजीने नमककानून तोड़ डाला !

न रोकटोक, न पुलिस ।

बम्बई और अन्य स्थानोंमें भी सत्याग्रह ।

बम्बई और खेड़ा जिलेमें प्रमुख कार्यकर्ता गिरफ्तार ।

रासमें एक प्रमुख कार्यकर्ताको २ साल की कैद, ५००) जुर्माना ।

डांडी शिविर, ६ अप्रैल ।

महात्मा गांधीने आज ठीक ६॥ बजे नमक-कानून तोड़ा । उन्होंने ... जमा हुए नमकमेंसे, जिसे लेनेकी मनाही है, थोड़ासा नमक उठा लिया । उनके साथके स्वयंसेवकोंने भी यही किया । इसके बाद महात्माजी

महात्माजीका संदेश

सत्याग्रहकी आम इजाजत ।

मगर परिणामको समझकर ।

स्त्रियोंके लिये विशेष कार्य ।

डांडी शिविर, ६ अप्रैल ।

महात्माजी ज्यों ही नमक कानून तोड़ कर ... अपने मंगलेपर वापस आये त्यों-ही सर्व प्रथम "फ्री प्रेस" के प्रतिनिधिने जाकर उनका अभिनन्दन किया और सन्देश देनेकी प्रार्थना की। महात्माजीके चेहरेसे मालूम होता था कि कुछही मिनट पहले उन्होंने ...

काशीमें सत्याग्रह

मंगलवार ८ अप्रैलसे आ...

काशी विद्यापीठके पड़ोसमें

काशी, ७ अ...

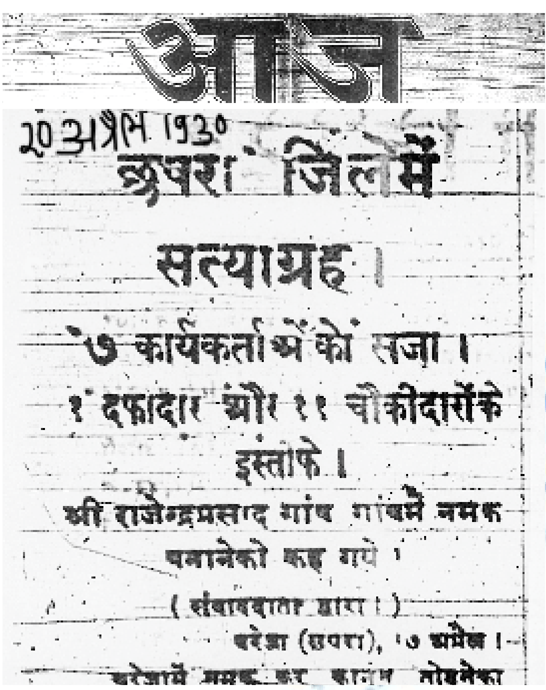

आज

२० अप्रैल 1930

छपरा जिलेमें सत्याग्रह ।

७ कार्यकर्ताओंको सजा ।

१ दफादार और ११ चौकीदारोंके इस्तीफे ।

श्री राजेन्द्रप्रसाद गांव गांवमें नमक बनानेको कह गये ।

(संवाददाता द्वारा ।)

बरेजा (छपरा), १७ अप्रैल ।

बरेजामें नमक कर कानून तोड़नेका ...

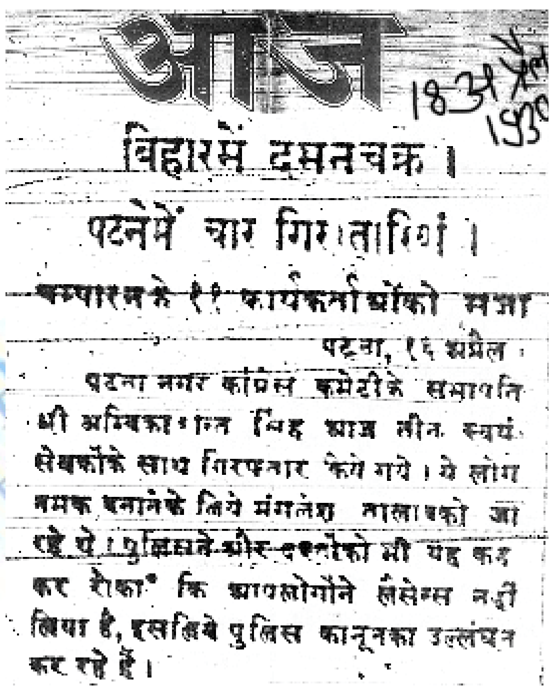

आज

18 अप्रैल 1930

बिहारमें दमनचक्र ।

पटनेमें चार गिरफ्तारियां ।

चम्पारनके ११ कार्यकर्ताओंको सजा

पटना, १६ अप्रैल ।

पटना नगर कांग्रेस कमेटीके सभापति श्री अम्बिकाकान्त सिंह आज तीन स्वयं-सेवकोंके साथ गिरफ्तार किये गये । ये लोग नमक बनानेके लिये मंगलेश तालाबको जा रहे थे । पुलिसने और दलोंको भी यह कह कर रोका कि आपलोगोंने लैसेन्स नहीं लिया है, इसलिये पुलिस कानूनका उल्लंघन कर रहे हैं ।

विभिन्न समाचार पत्रों में छपे समाचारों में आप क्या समानता पाते हैं। वर्ग कक्ष में शिक्षक की सहायता से चर्चा करें।

बिहार सत्याग्रह समाचार

११ मई, १९३०. अंक - ८

सारन

ताड़ी इस साल न बनने पायेगी

छपरा :— इधर से प्राप्त समाचारों से विदित होता है कि यहां के कार्यकर्त्ताओं ने ताड़ के विरुद्ध एकदम से आंदोलन छेड़ा है। मांझी थाने के ताड़ के पेड़ों के कोपल धड़ाधड़ काटे जा रहे हैं। कार्यकर्त्ताओं की यही कोशिश है कि इस साल जिले भर में ताड़ी न [illegible] और ऐसा ताड़ न बचेगा जिससे ताड़ी चुआई जा सके।

सैनिकों की भरती

मादक द्रव्य बहिष्कार और विदेशी वस्त्र बहिष्कार के लिए जिले भर से सैनिकों की भरती की जा रही है। सारे जिले में बहुत उत्साह दिखाई देता है।

सिवान, छपरा, महराजगंज और गोपालगंज में धरना देने के लिए पूरी तैयारी की जा चुकी है और चुने हुए अनुभवी आदमियों पर धरने को चलाने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।

सोनपुर में जमकर धरना, बहिष्कार और संगठन का काम जारी है।

(२)

मुजफ्फरपुर

मुजफ्फरपुर जिले में इस समय ७८ स्थानों में नमक बन रहा है। मादक द्रव्य बहिष्कार का काम जारी। हरेक जाति की पंचायतें रोज इसके लिए हो रही हैं।

हाजीपुर

महनार थाने के गिरफ्तारी पर अपनी नाराजगी दिखलाने के लिए पूरी हड़ताल रही। इंग्लिश स्कूल और रजिस्ट्री आफिस सब बन्द थे। श्री रामदयाल सिंह को एक साल की सजा दी गई है। हथकड़ी पहनाकर नगर में घुमाया गया।

दरभंगा

सोनवाल आश्रम का अनुकरणीय सेवा कार्य

सोनवाल गांव में घूम कर रोगियों की सेवा कर सोनवाल आश्रम के कार्यकर्ता अपने [illegible] के नाम को सार्थक कर रहे हैं। कमलेश्वर, बेहटी, बिनौली, मरी, बसैर, सुपौल और नेहरा आदि गावों में यहां के कार्यकर्ता दवा बांट रहे हैं। श्री महावीर शर्मा वैद्य, श्री हृदय नारायण वकील और श्री राधाकान्त शर्मा बड़े उत्साह से संगठन, विदेशी वस्त्र बहिष्कार और मादक द्रव्य निषेध का कार्य कर रहे हैं।

विराट जुलूस गावों में घूमा — म० गान्धी की गिरफ्तारी की खबर के पहुंचते ही ७ को सुबह ही श्री राम [illegible] में १०० सत्याग्रही एकत्रित हुए। उनके हाथ में झण्डे और पोस्टर थे। यह जुलूस [illegible], श्री दिलपुर, [illegible] आनन्दपुर और सोहरा होते [illegible] पहुंचा। [illegible] के साथ [illegible] चनपटी [illegible] और लहेरिया सराय से [illegible] जुलूस पहुंचा [illegible] सभा हुई। जिस जिस गांव से यह जुलूस गुजरा वहां नया उत्साह और नई स्फूर्ति आ गई।

लहेरिया सराय

पूर्ण सफल हड़ताल — मुसलमानों ने भी साथ दिया

दरभंगा, लहेरिया सराय, मधुबनी, [illegible]पुर, [illegible] राजनगर में पूरी हड़ताल रही। विद्यार्थी स्कूल नहीं गए। [illegible] बैंक और म्युनिसिपल दफ्तर भी बन्द रहे। मुसलमानों ने [illegible] दिया है कि [illegible] के बाद कांग्रेस का काम करेंगे।

समस्तीपुर

[illegible] सत्याग्रह 360

समस्तीपुर डिविजन के [illegible] सत्याग्रह [illegible] उत्साह से [illegible] जा रहा है। [illegible] बड़ी दिलचस्पी दिखाई जा रही है और जनता में बहुत उत्साह है।

सिगरेट का बहिष्कार — समस्तीपुर के २० प्रमुख व्यापारियों ने सिगरेट का बहिष्कार करने का निश्चय किया है। उम्मीद है और व्यापारी भी इसमें पूरा सहयोग देंगे।

भागलपुर

सभापति को दो साल की कड़ी कैद

भागलपुर जिला कांग्रेस कमेटी के [illegible] और [illegible]

स्रोत

वाइसराय के नाम गांधीजी का पत्र

सत्याग्रह आश्रम, साबरमती
२ मार्च १९३०

प्रिय मित्र,

निवेदन है कि इसके पहले कि मैं सविनय कानून भंग शुरू करूँ और शुरू करने पर जिस जोखिम को उठाने के लिए मैं इतने सालों से हिचकिचाता रहा हूँ, उसे उठाऊँ, इस उम्मीद से मैं आपको यह पत्र लिखने जा रहा हूँ कि अगर समझौते का कोई रास्ता निकल सकें तो उसके लिए कोशिश कर देखें।

अंहिसा में मेरा विश्वास तो जाहिर ही है। जानबुझ कर मैं किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं कर सकता, तो फिर मनुष्य-हिंसा की तो बात ही क्या है? फिर भले ही उन मनुष्यों ने मेरा या जिन्हें मैं अपना समझता हूँ उनका, बड़े से बड़ा अहित ही क्यों न किया हो। इसलिए जो भी अंग्रेजी सल्तनत को मैं एक बला मानता है, तो भी मैं यह कभी नहीं चाहता कि एक भी अंग्रेज को या भारत में उपार्जित उसके एक भी उचित हित को, किसी तरह का नुकसान पहुँचे।

तो फिर मैं किस कारण अंग्रेजी राज्य को शापरूप मानता हूँ? कारण ये है: इस राज्य ने एक ऐसा तंत्र खड़ा कर लिया है कि जिसकी वजह से मुल्क हमेशा के लिए बढ़ते हुए परिणाम में बराबर चूसा जाता रहे; अलावा इसके, इस तंत्र का फौजी और दीवानी खर्च इतनी ज्यादा तबाही करने वाला है कि मुल्क उसे निकाले।

अगर आप न सुनेंगे तो-

लेकिन अगर ऊपर लिखी बुराइयों को दूर करने का कोई इलाज आप ढूँढ निकालेंगे और मेरे इस खत का आप पर कोई असर न होगा, तो इस महीने की ग्यारहवीं तारीख को मैं अपने आश्रम के जितने साथियों को ले जा सकूँगा उतने साथियों के साथ नमक संबंधी कानून को तोड़ने के लिए कदम बढ़ाऊँगा। गरीबों के दृष्टिबिन्दु से यह कानून मुझे सबसे ज्यादा अन्यायपूर्ण मालूम हुआ है। आजादी की यह लड़ाई खास कर देश के गरीब से गरीब लोगों के लिए है। अतः यह लड़ाई इस अन्याय के विरोध से ही शुरू की जायगी।

ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटी - जी.-२६/१९३० (हिन्दी अनुवाद)

WEB COPY

समय के साथ परिवर्तन

कक्षा सात में हमलोगों ने पढ़ा था कि समय के साथ हमारे समाज में अनेक परिवर्तन होते रहते हैं। ये परिवर्तन कभी शब्दों के अर्थ, कभी स्थानों के नाम, कभी भौगोलिक सीमाओं एवं जीवन शैली के संदर्भ में होते रहते हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप में आधुनिक भारत, बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान, भूटान और मालदीव सम्मिलित हैं। इनमें भारत, पाकिस्तान तथा बांग्लादेश अंग्रेजों के भारतीय साम्राज्य के अभिन्न अंग थे। म्यामांर (तत्कालीन बर्मा) तथा श्रीलंका (तत्कालीन सीलोन) भी 1937 ई. तक अंग्रेजों के एशियाई साम्राज्य के अंग थे। स्वतंत्रता के बाद हमारा देश हिन्दुस्तान दो भागों में विभाजित हो गया। बलुचिस्तान, सिंध, पश्चिमी पंजाब एवं पूर्वी बंगाल पाकिस्तान में चले गए। बाद में पाकिस्तान का पूर्वी हिस्सा अलग होकर बांग्लादेश के नाम से स्वतंत्र देश बना। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में बिहार एवं उड़ीसा बंगाल प्रांत के अंग थे। 1912 ई. में बिहार एवं उड़ीसा को बंगाल से अलग कर एक नये प्रांत के रूप में संगठित किया गया। 1936 में उड़ीसा को बिहार से अलग कर, दोनों को अलग प्रांत का दर्जा दिया गया। पुनः 15 नवम्बर 2000 को बिहार से उसके, दक्षिण पठारी क्षेत्र को अलग कर पृथक झारखंड राज्य गठित हुआ।

वर्त्तमान बिहार

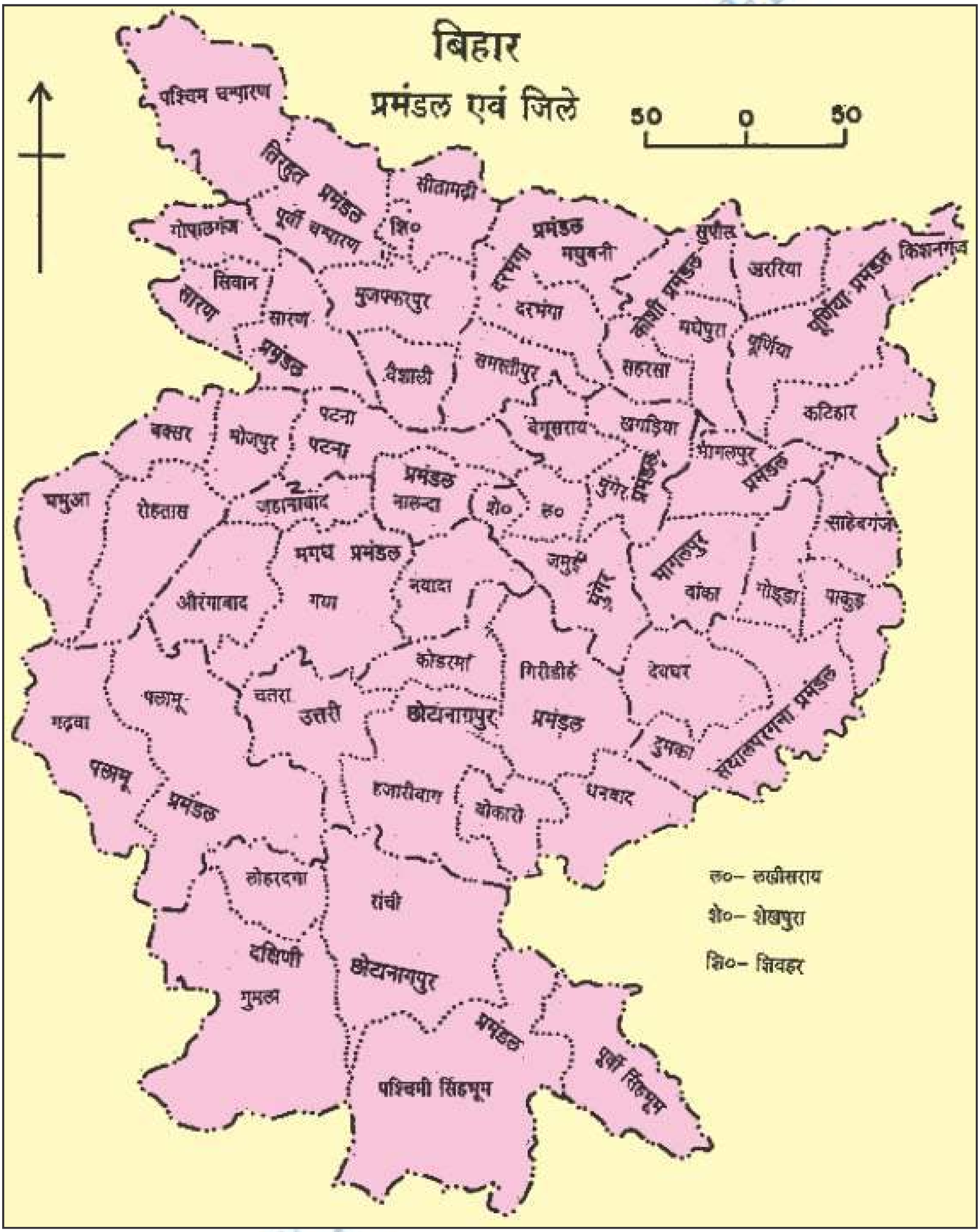

विभाजन के पूर्व बिहार

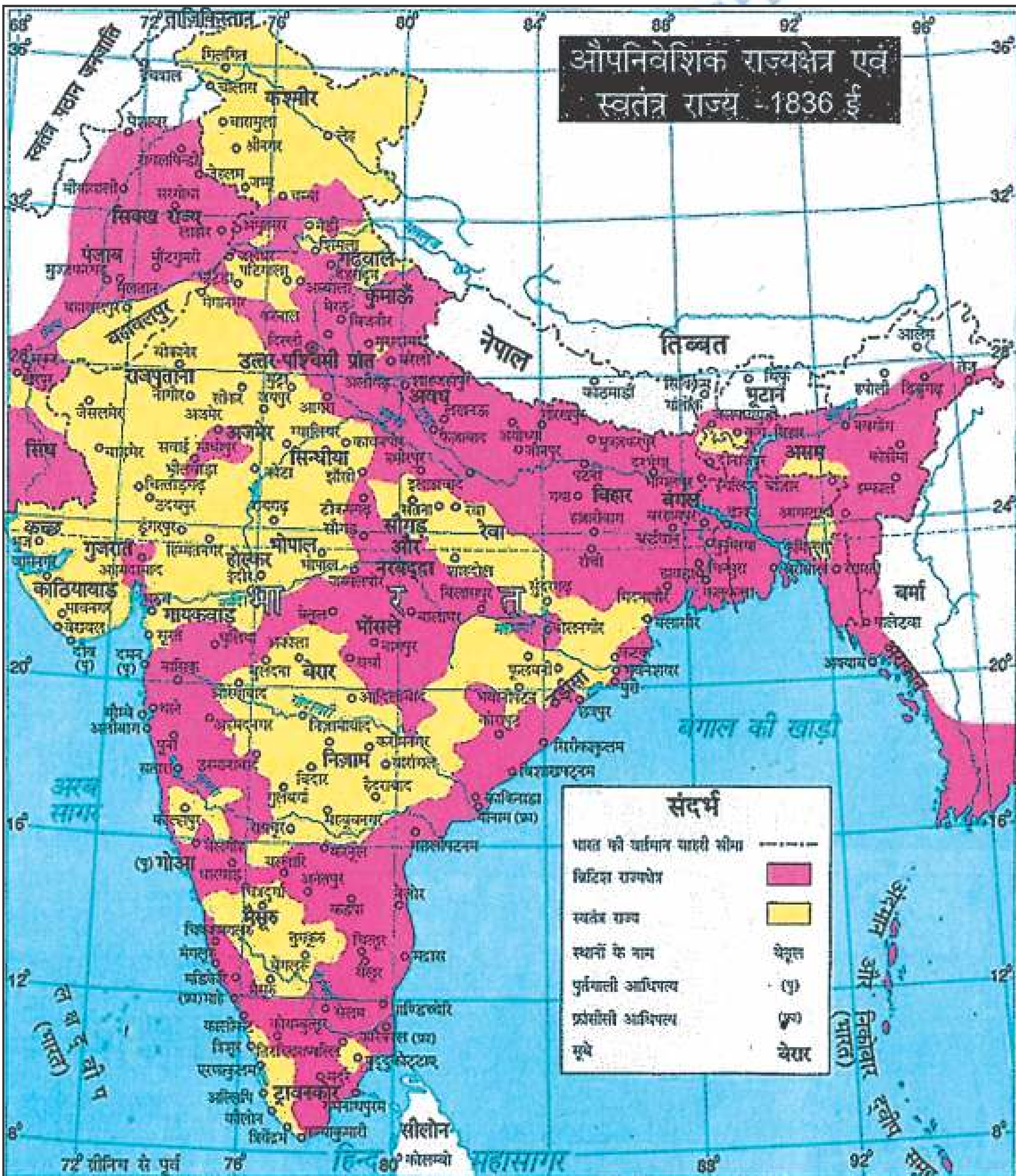

आजादी के पहले का भारत

वर्त्तमान भारत

गतिविधि – भारत एवं बिहार के दिये गए इन चार अलग–अलग मानचित्रों से आपको किस प्रकार की जानकारी प्राप्त हो रही है। सोच कर बताएँ?

अभ्यास

आइए फिर से याद करें :–

1. रिक्त स्थानों को भरिए।

(क) पूँजीपतियों का मुख्य उद्देश्य था अधिक से अधिक .... कमाना।

(ख) पंद्रहवीं शताब्दी में एक नये आंदोलन की शुरूआत हुई जिसे .... कहते हैं।

(ग) मशीनों से वस्तुओं के उत्पादन की प्रक्रिया को .... क्रांति कहते हैं।

(घ) .... में सरकारी दस्तावेजों को सुरक्षित रखा जाता है।

(ङ) समय के साथ देश और राज्य की .... सीमाओं में परिवर्तन होते रहते हैं।

2. सही और गलत बताइए।

(क) वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ है प्रश्न प्रस्तुत कर प्रयोग द्वारा ज्ञान प्राप्त करना।

(ख) अंग्रेज इतिहासकार जेम्स मिल का भारतीय इतिहास का धर्म के आधार पर बांटना उचित था।

(ग) अमरीकी स्वतंत्रता संग्राम के बाद वहाँ के लोगों ने गणतंत्र प्रणाली की शुरूआत नहीं की।

(घ) ऐतिहासिक स्रोतों से एक आम आदमी के बारे में भी जानकारी मिलती है।

(ङ) आजादी के पहले हमारे देश की जो भौगोलिक सीमा थी, आजादी के बाद भी वही रह गई।

आइए विचार करें :–

(I) मध्यकाल और आधुनिक काल के ऐतिहासिक स्रोतों में आप क्या फर्क पाते हैं। उदाहरण सहित लिखिए।

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

(ii) जेम्स मिल ने भारतीय इतिहास को जिस प्रकार काल खंडो में बांटा, उससे आप कहाँ तक सहमत हैं।

(iii) सरकारी दस्तावेजों को हम कैसे और कहाँ–कहाँ सुरक्षित रख सकते हैं।

(iv) यूरोप में हुए परिवर्त्तन किस प्रकार आधुनिक काल के निर्माण में सहायक हुए।

आइए करके देखें :–

(I) भारत में पहली और आखिरी जनगणना कब हुई पता करें? इसके द्वारा कुछ ऐसे तथ्यों एवं सूचनाओं का संकलन करें जिसका उपयोग हम ऐतिहासिक स्रोत के रूप में कर सकें।

© BSTBPC WEB COPY ,NOT TO BE PUBLISHED